IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

Impact Factor: 6.252

Volume 2, Issue 1, October 2022

प्राचीन हिंदी काव्य साहित्य से प्रकृति का संबंध

डॉ. सनकादिक लाल मिश्र[1] and अजीत कुमार मिश्र[2]

प्राध्यापक, हिंदी[1] and शोध छात्र, हिंदी विभाग[2]

शा. शहीद केदारनाथ महाविद्यालय , मऊगंज, रीवा (म.प्र.)

अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय , रीवा, (म.प्र.)

शोध संक्षेप– प्राचीन हिंदी काव्य साहित्य का प्रकृति से बहुत गहरा संबंध है। स भवत: इस सृष्टि पर जब प्रथम काव्य रचना ने जन्म लिया होगा, जब प्रकृति सौंदर्य के चरम पर रही होगी। कोमल हृदय व्यि‌त का भाव जब प्रकृति मय हो जाता है, तब जाकर एक सुंदर कार्य रचना होती है। प्राचीन हिंदी काव्य साहित्य के कण–कण में प्रकृति सौंदर्य और उसका महत्व समाया हुआ है। अति प्राचीन काल के वेद, पुराण, महाकाव्यों में प्रकृति और मनुष्य का अटूट संबंध वर्णित किया गया है। रामचरित मानस, श्रीमद् भागवत गीता जैसी कालजयी रचनाओं में प्रकृति के महत्व को समझाया गया है। इन्हीं महाकाव्यत्मक कथानकों को आधार मानकर आदिकाल से लेकर आधुनिक काल की रचनाओं में साहित्यकारों ने मानव जनजीवन और प्रकृति का प्रेममयी संबंध उद्धृत किया है।

प्रस्तावना–

हिंदी साहित्य के आर भक काल आदिकाल का प्रथम कवि सातवीं शता‌दी के 'सरहपाद' को माना जाता है, जो त्त्र सिद्धों में से एक थे। ''हिंदी के प्रथम कवि 'सरहपाद' की जो रचनायें मिली हैं, वे सभी मुक्तक हैं। अत: प्रथम रचना के नाम किसी एक पुस्तक को प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने हिंदी काव्यधारा में 'सरहपाद' की कुछ रचनाओं का संग्रह किया है, उसी के आधार पर उनकी हिंदी का एक अंश यहां उद्धृत किया जाता है,

जह मन पवन न संचरइ, रवि शशि नाह पवेश।
तहि वट चित्त विसाम करु, सरहे कहिअ उवेश।।''क

'शशि' या चंद्रमा, 'वट' अर्थात् बरगद का वृक्ष जैसे प्रकृति तत्वों का सहारा लेकर मन की स्थिर स्थिति को 'सरहपाद' प्रकट करना चाहते हैं। आदिकाल की कृति 'वसंत विला' के चौरासी दोहों में वसंत और स्त्रियों का मनोहारी चित्रण किया गया है। प्रकृति और नारी का मदोन्मत स्वरुप श्रृंगार रस की तीव्र धारा को प्रवाहित करता है। ''स्त्री–पुरुष–प्रकृति तीनों में अजस्त्र बहती मदोन्मता का इस काव्य में जैसा चित्रण मिलता है, वैसा रीतिकालीन हिंदी कवि भी नहीं कर सके। एक ओर कोकिल–कुंजन, दूसरी ओर पतियुक्ता युवतियों का का विलास जिसे देखकर विधुर जन तथा वियोगिनी नारियॉं किशोर मदन का मदिर कुंजन मन में अनुभव करती हुई कांपने लगती हैं! कवि लिखता है–

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, October 2022
Impact Factor: 6.252

इणि परि कोइलि कूजइ, पूजइं युवति मणोर।

विधुर वियोगिनि धूजइं, कूजइ मयण किसोर।।''ख

यहां प्रकृति के साथ मानवीय भावों को कवि ने स बद्ध किया है। योंकि प्रकृति से अच्छा दु:ख का साथी और दूसरा और कोई जान नहीं पड़ता। यह दर्शाता है कि जब से मानव की समझ बढ़ी है, उसने प्रकृति को ही अपने जीवन में, दसों दिशाओं में हर जगह पाया है।

प्राचीन काल से ही साहित्य और पर्यावरण का संबंध अत्यंत निकटतम रहा है। तुलसीदास कृत 'रामचरित मानस' में वर्णित प्रकृति चित्रण में प्रकृति की सुरक्षा एवं पर्यावरण की शुद्धता चारों ओर व्याप्त थी। जैसे-

''पुरर यता रामजब देखी

हरषे अनुज समेत विश्नेषी।।

वाणी कूप सरित सरनामा।

सलित सुधासम मनि सोपाना।।

गुंजत मंजु मत रस भृंगा।

कूजत कल बहुबरन विहंगा।।

बरन-बरन बिकसे बन जाता।

त्रिविध समीर सदा सुख दाता।।

दो सुमन वाटिकाबाग बन विपुल बिहंग निवास।

फूलत फलत सुपल्लवत सोहत पुर चहुँपास।।''फ

गोस्वामी तुलसीदास जी ने इन पं तियों में जनकपुर की शोभा, बाग-वाटिकाएं, पुरर यता, वृक्षों की अवली, पेड़-पौधों, बेल-लताओं, कुंजों, फुलवाड़ियों से आच्छादित भूमि के सौंदर्य को मंडित किया है, जो अद्वितीय व मनमोहक है। इसी प्रकार 'रामचरित मानस' के अरण्यकाण्ड में प्रकृति की सुषमा को तुलसीदास जी ने उकेरा है-

''विकसे, सरसिज नांना रंगा।

मधुर मुखर गुंजत बहु भृंगा।।

बोलत जलकु कुट कल हंसा।

प्रभु विलोकि जनु करत प्रसंसा।।

चक्रवाक बक खग समुदाई।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, October 2022
Impact Factor: 6.252

देखत बनइ बरनि नहिं जाई।।

सुंदर खग गन गिरा सुहाई।

जात पथिक जनु लेत बोलाई।।

ताल समीप मुनिन्ह गृह छाए।

चहुँ दिशि कानन बिरप सुहाए।।

चंपक बकुल मदंब तमाला।

पाटल पनस परास रसाला।।

नवपल्लव कुसुमित तरु नाना।

चंचरीक पटली कर गाना।।

सीतल मंद सुगंध सुभाऊ।

संतत बहइ मनोहर बाऊ।।

कुहू-कुहू कोकिल धुनि करहीं।

सुनि रव सरस ध्यान मुनि टरहीं।।''[७]

तुलसी के राम पर्यावरण हित को ध्यान में रखकर चौदह वर्षों तक जंगलों में रहें। कंदमूल फल खाये। वन-वन, उपवनों की सुषमा का आनंद प्राप्त किया। आकाश में विचरण करने वाले पक्षियों के कलरव, कोयल की बोली, हंसों की जलक्रीड़ा और मनोरम जंगलों में बहती सुगंधित वायु का प्रभु श्री राम ने रसपान किया।

संस्कृति कवि कालिदास की कृतियों में प्रकृति सौंदर्य, चहुँओर आच्छादित पर्यावरण के बारे में खूब लिखा गया है। कालिदास की रचनाओं में प्रकृति के प्रति प्रेम का वर्णन अद्‌भुत ढंग से किया गया है। उन्होंने 'शाकुंतलम्' नाटक में मनुष्य और प्रकृति के बीच न्यूनतम दूरी प्रकट की है। बल्कलवसना शकुंतला ऋषि आश्रम में पली, पेड़-पौधों को पानी लगाती-सींचती, देख-रेख करती, यह उसकी पर्यावरण के प्रति जागरुकता को दर्शाती है। प्रकृति के कवि कालिदास में प्रकृति प्रियता व पर्यावरण जागरुकता विद्यमान है। 'मेघदूत', 'ऋतुसंहार', 'रघुवंशम्' से लेकर 'अभिज्ञान शांकुतलम्', 'विक्रमोर्वशीयम', और 'मालविकाग्नि मित्रम' तक प्रकृति की सुषमाच्छदित घटा को वर्णित किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

'प्राचीन हिंदी काव्य साहित्य से प्रकृति का संबंध' विषय में शोध अध्ययन का उद्देश्य प्राचीन काल के साहित्य और उस समय की प्राकृतिक स्थिति को समझना है, जो मानव मन को सदैव प्रफुल्लित, उत्साहित और उमंग से परिपूर्ण करती थी। प्राचीन समय की साहित्यिक रचनाओं का अवलोकन करने से ऐसी अनुभूति प्राप्त होती है। काव्य साहित्य ने हमेशा से प्रकृति के साथ मधुर संबंध बनाये रखने मानव समाज को प्रेरित किया है, जिस पर प्रकाश डालने का प्रयास इस अध्ययन में किया गया है।

शोध प्रविधि– इस अध्ययन में मु यतः ऐतिहासिक शोध प्रविधि का प्रयोग किया है।

निष्कर्ष

साहित्य का मुय कार्य मानव मन में संवेदनाओं को जीवित रखना है। यदि मानव में संवेदना का भाव समाप्त हो जायेगा, तो वह दानव की श्रेणी में आ जायेगा। इस लिहाज से प्राचीनतम् साहित्यकारों ने हमेशा मनुष्य को प्रकृति से प्रेम करने की ही सीख दी। हिंदी साहित्य के जाने कितने साहित्यकारों ने प्रकृति सौंदर्य का वर्णन किया है। प्रकृति और मानव के संबंध को स्थापित किया है। प्रकृति प्रेम के बीच पनपते मानव प्रेम को पोषित किया है। कह सकते हैं वास्तव में जिनके बिना आज भी मानव का जीवन अधूरा है।

संदर्भ सूचीः

हिंदी साहित्य का इतिहास, डॉ नगेंद्र, पृष्ठ ब्ल

वहीं, पृष्ठ स्त्रख

श्रीरामचरित मानस, बालकाण्ड, तुलसीदास, पृष्ठ सं या क्फब, (मझला साइज), गीता प्रेस गोरखपुर,

वहीं, अरण्य काण्ड, पृष्ठ सं या फ–भ